ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

शिक्षक – छात्र का सम्बन्ध

शिल्पी सक्सेना

लेक्चरार, तीर्थंकर आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन मुरादाबाद,उ0प्र0

जननी पहला गुरू, पिता दूसरा गुरू तथा तीसरा गुरू वह व्यक्ति है जो एक अनपढ़ बालक को समाज के योग्य बनाता है। हिन्दू धर्म में गुरू को भगवान से भी श्रेष्ठ माना गया है क्योकि गुरू ही अपने शिष्यों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है तथा जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार करता है।

मानव समाज में शिक्षा प्रदान करना और शिक्षा ग्रहण करना दोनों ही महत्वपूर्ण माने जाते रहे हैं। ज्ञान के अभाव में मनुष्य को पशु समान माना जाता है और बिना गुरू के ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

ज्ञान अथवा शिक्षा प्रदान करने और ग्रहण करने के लिए ही गुरू–शिष्य का सम्बन्ध बना है क्योंकि इस सम्बन्ध के उपरांत ही पशु समान मनुष्य के ज्ञानी बनने की प्रक्रिया आरम्भ होती है । एक पारम्परिक भारतीय व्यवस्था में गुरू–शिष्य का रिश्ता बहुत ही पवित्र रिश्ता माना जाता था। जहाँ गुरू या शिक्षक अपने छात्रों में आध्यात्मिक, वैदिक, नैतिक और अकादमिक शिक्षाओं को संचारित करते थे । गुरू शब्द का अर्थ एक अँधेरे में फसे हुए व्यक्ति को ज्योर्तिमान करना है। गु का अर्थ है–अंधकार और रू का अर्थ है–प्रकाश।

गुरूर ब्रह्मा गुरूर विष्णु , गुरूर देवो महेश्वरा।
गुरू साक्षात् परब्रह्मा , तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही भगवान शंकर है और गुरू ही साक्षात् परब्रह्म है। इसलिए ऐसे गुरू को नमन है।

प्राचीन काल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए शिष्य गुरूकुल अथवा आश्रमों में जाया करते थे। उस काल में गुरू शिष्य का सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण हुआ करता था।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

शिक्षा प्रदान करने वाले गुरू को भगवान के तुल्य माना जाता था। अपने शिष्यों के प्रति गुरू का व्यवहार भी पिता तुल्य हुआ करता था।

गुरू अपनी संतान की भांति शिष्यों के भविष्य के प्रति चिंतित रहते थे और उन्हें शिक्षित करने के लिए यथा संभव प्रयत्न किया करते थे। एक पिता के समान गुरू गलती करने पर शिष्यों को सख्त सज़ा भी दिया करते थे ताकि अपनी गलती अनुभव करके शिष्य उसे दोहराने का प्रयत्न न कर सके। उस काल में शिष्य भी गुरू द्वारा दी गयी सज़ा को सहर्ष स्वीकार कर लिया करते थे।

उन्हें अपने गुरू पर पूर्ण विश्वास होता था। उस समय शिक्षा का उद्देश्य उच्च नैतिक महत्व से संतुलित व्यक्तित्व तथा अज्ञानता को ज्ञानता में बदलना होता था। ऐसे गुरू शिष्य सम्बन्ध में एक सक्षम गुरू के कंधों पर सब कुछ छोड़ दिया जाता था। जो एक निर्माता के रूप में अभिनय करके अपने शिष्यों को एक नयी आकृति प्रदान करता था। परन्तु गुरूकुल परम्परा समाप्त होने के साथ ही गुरू शिष्य के संबंधों में गिरावट आने लगी। आश्रमों के स्थान पर विद्यालय या महाविद्यालय बनने लगे।

छात्रों के लिए शिक्षा ग्रहण करना पूर्ववत जीवन की आवश्यकता बन रहा है परन्तु शिक्षकों के लिए विद्यालय में जाना मात्र नौकरी करना रह गया है।

शिक्षक छात्र के सम्बन्ध व्यवसायिक हो गए हैं। शिक्षक मानने लगे हैं कि छात्रों को पढ़ाना उनकी विवशता है क्योकि इसी कार्य के लिए उन्हें वेतन मिलता है। शिक्षा प्रदान करना वास्तव में उनकी रोजी रोटी है दूसरी ओर छात्रों के मन मस्तिष्क में भी ये बात बैठ गयी है कि शिक्षा प्रदान करके शिक्षक उन पर कोई उपकार नहीं करते शिक्षा ग्रहण करने के लिए उन्हें शुल्क देना पड़ता है। और उसी शुल्क से शिक्षक वेतन प्राप्त करते हैं इस नयी विचार धारा का शिक्षक छात्र के सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। शिक्षक छात्र के सम्बन्ध की गरिमा बिखरने लगी है।

शिक्षकों का छात्रों के प्रति पिता तुल्य व्यवहार नहीं रहा और छात्रों के हृदय में शिक्षक के प्रति आदर का भाव घटने लगा है। ऐसी स्थितियों में छात्रों की गलती पर शिक्षकों के सख्त व्यवहार का भी विरोध किया जाने लगा है । आज शिक्षक छात्र के सम्बन्धों का पूर्णतया पतन हो चुका है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

शिक्षक छात्र के सम्बन्धों में हुए पतन का दुष्परिणाम भी नयी पीढ़ी को भुगतना पड़ रहा है। शिक्षा एवं योग्यता कठिन परिश्रम से ही प्राप्त की जा सकती है।

शिक्षक छात्र के सम्बन्धों में प्रेम एवं आदर का भाव होना परमावश्यक है। नयी पीढ़ी को शिक्षित सभ्य बनाने के लिए शिक्षक छात्र के सम्बन्ध को गरिमा प्रदान करने की विशेष आवश्यकता है।

संक्षिप्तिका

i. भारतीय शिक्षा की सम सामयिक समस्याऐं — डॉ0 रामशकल पाण्डेय एव डॉ0 करुणाशंकर मिश्र

ii. भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याऐं — लाल एवं शर्मा

iii. आधुनिक भारतीय शिक्षा — सुरेश भटनागर

iv. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऐं — पी डी पाठक

v. भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास — डॉ0 वी बी सिंह एवं सुधा पाहुजा

vi. मानव मूल्य एवं शिक्षा — आर ए शर्मा

vii. शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धांत एवं समस्याऐं — दिनेश चंद्र जोशी एवं चतर सिंह मेहता

viii. भावी शिक्षा एक परिदृश्य — डॉ0 पी एन मेहरोत्रा

www.ijahms.com